भले मनों की तलाश
(16:40-17:15)

यीशु ने बीज बोने वाले के दृष्टांत को विस्तार से समझाकर, कहा कि अच्छी भूमि उन लोगों को कहा गया है ''जो वचन सुनकर *भले और उत्तम मन* में संभाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं'' (लूका 8:15)। आज की सबसे बड़ी जरूरत ''भले और उत्तम मन'' हैं। इस प्रकार के मन की बढ़िया व्याख्या हमारे इस अध्ययन में मिलती है: ''ये लोग [बिरीया के यहूदी] तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं'' (प्रेरितों 17:11)। आत्मा को जीतने वाला हर गम्भीर व्यक्ति भले मनों की तलाश में रहता है। यूनान से यात्रा जारी रखते हुए पौलुस भी तो ऐसे ही मनों की तलाश में था।

फिलिप्पी में भले मनों की तलाश (16:40)

पिछले दो पाठों में, हमने देखा था कि पौलुस और उसके साथी फिलिप्पी में भले मनों की खोज में थे, और वे उन्हें लुदिया, दरोगा और उनके घरानों में मिल गए। अध्याय 16 की अंतिम आयत कहती है कि उन्हें और भी भले मन मिले: ''वे ... लुदिया के यहां गए, और भाइयों से भेंट करके उन्हें शान्ति दी'' (आयत 40क)। परमेश्वर ने बहुत से ''भाइयों'' के मन परिवर्तन से उनके प्रयासों में आशीष दी थी।

लूका ने मण्डली के आरम्भ के बारे में कोई और विवरण नहीं दिया। बाद में, जब पौलुस ने रोम से फिलिप्पी की कलीसिया को लिखा, तो उसने अपना पत्र ''सब पवित्र लोगों के नाम, जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों और सेवकों समेत'' लिखा (फिलिप्पियों 1:1)। प्राचीनों को ''अध्यक्षों'' कहकर भी सम्बोधित किया जाता है।[1] शायद पौलुस ने अपने जाने से पहले कलीसिया के संगठित होने में सहायता की थी (प्रेरितों 14:23); यह भी हो सकता है कि कलीसिया उसके जाने के बाद संगठित हुई हो।

उन भाइयों को जो लुदिया के घर में मिले थे, शान्ति देने के बाद पौलुस और सीलास कहीं और भले मनों की तलाश में ''चले गए'' (आयत 40ख)। उनके ऐसा करने से, स्पष्ट है कि तरुण कलीसिया के साथ काम करने के लिए लूका फिलिप्पी में रहा। हम इस निष्कर्ष पर इसलिए पहुंचते हैं क्योंकि लूका ने अपने वर्णन में पौलुस और सीलास के जाने के बारे में बताते हुए उत्तम पुरुष (''हम'') का प्रयोग नहीं किया और जब पौलुस दोबारा

फिलिप्पी में गया तो उस समय 20:5, 6 तक भी उत्तम पुरुष (अर्थात हम) दिखाई नहीं देता। (फिलिप्पी में लूका के रहने से यह समझाने में सहायता मिल सकती है कि पौलुस के जाने के बाद फिलिप्पी की कलीसिया पौलुस में निजी दिलचस्पी क्यों लेती रही।) कई लोगों का यह भी मानना है कि तीमुथियुस फिलिप्पी में कुछ अधिक देर तक रहा, और अन्ततः बिरीया में पौलुस और सीलास के साथ मिल गया।[2]

थिस्सलुनीके में भले मनों की तलाश (17:1-10)

वहां से निकलकर पौलुस और सीलास, रोम की ओर जाते हुए उस ओर जाने वाले आनन्दमय दलों से मिलते हुए एगनेशियन मार्ग से पश्चिम की ओर चले गए।[3] एक दिन चलकर वे अम्फिपुलिस में पहुंच गए होंगे, जो फिलिप्पी के एक ज़िले की राजधानी थी।[4] एक दिन की और यात्रा करने से वे अपुल्लोनिया पहुंच गए (आयत 1क)। अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया तुलनात्मक रूप में छोटे नगर थे, और स्पष्ट है कि ये मिशनरी बिना प्रचार करना छोड़े इधर से ही गुजरे।[5] उनका गन्तव्य स्थान मकिदुनिया की राजधानी थिस्सलुनीके था। सिकन्दर महान की बहन के नाम से जाना जाने वाला थिस्सलुनीके एक स्वतन्त्र नगर था,[6] जो संसार के उस भाग की प्रमुख बन्दरगाह[7] और इफिसुस और कुरिन्थुस का प्रतिद्वंद्वी, और व्यापार का प्रमुख केन्द्र था।

एगनेशियन मार्ग थिस्सलुनीके के बीच से होता हुआ इसका मुख्य मार्ग बन जाता था। जब पौलुस और सीलास इस राजधानी नगर में पहुंचे, तो उन्होंने पाया कि, फिलिप्पी के विपरीत, थिस्सलुनीके में बहुत बड़ी जनसंख्या में यहूदी हैं। इस कारण पौलुस आराधनालय में जाकर अपना काम आरम्भ कर सका था:

> वे ... थिस्सलुनीके में आए, जहां यहूदियों का एक आराधनालय था। और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उन के पास गया, और तीन सब्त[8] के दिन पवित्र शास्त्रों से उन के साथ विवाद किया। और उनका अर्थ खोल खोलकर समझाता था, कि मसीह को दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य था; और यही यीशु जिस की मैं तुम्हें कथा सुनाता हूं, मसीह है (आयतें 1ख-3)।

इन आयतों में व्यक्त चार क्रियाओं से पौलुस द्वारा यहूदियों में प्रचार करने की रूपरेखा मिलती है: (1) उसने विवाद किया, (2) उसने अर्थ खोल-खोल कर समझाया, (3) उसने ऐलान किया। पौलुस के दो लक्ष्य थे: एक पुराने नियम के शास्त्रों में से यह प्रमाणित करना कि मसीह के लिए दुख उठाना और जी उठना ज़रूरी था, और दूसरा यह प्रमाणित करना कि यीशु ही वह मसीह था, जिसकी राह वे देख रहे थे। इन लक्ष्यों में पहला बहुत ही कठिन था, क्योंकि यहूदियों के लिए एक दुखी उद्धारकर्त्ता पर विश्वास लाना कठिन था (1 कुरिन्थियों 1:23)। पौलुस ने ''प्रमाण देकर'' उनकी आपत्तियों का निराकरण किया,

जो उस यूनानी शब्द का अनुवाद है, जिसका अर्थ है ''साथ-साथ रखना।'' पहले वह पुराने नियम की भविष्यवाणियों का उल्लेख करता और यीशु से सम्बन्धित तथ्यों को उन भविष्यवाणियों के ''साथ-साथ रखते'' हुए प्रमाण देता।[9]

सुसमाचार के बीज को भले मनों में बोया जाए, तो निश्चय ही वहां अच्छी उपज होगी (लूका 8:8)। इसलिए हम पढ़ते हैं, कि ''उन में से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतेरों ने और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए'' (आयत 4)। ''कितनों'' शब्द पर ध्यान दें: यहूदियों में से केवल कुछ ही लोग मसीही बने। दूसरी ओर, परमेश्वर का भय मानने वाले ''बहुतेरे'' गैर-यहूदी[10] मसीही बन गए जिनमें बहुत सी ''कुलीन स्त्रियां'' थीं जो आराधनालय की उपासना में आती थीं।[11]

थिस्सलुनीके के मसीहियों के नाम लिखे पौलुस के पत्रों में, यह स्पष्ट है कि उसने और सीलास ने आराधनालय के बाहर, नगर में मूर्तिपूजकों में भी काफ़ी प्रचार किया (1 थिस्सलुनीकियों 1:9)। उन पत्रियों में, उसने वचन के प्रचार के अपने ढंग (1 थिस्सलुनीकियों 1:6; 2:2, 14), उन आश्चर्यकर्मों के बारे में जो उसने और सीलास ने किए (1 थिस्सलुनीकियों 1:5), और यह कि उसने थिस्सलुनीकियों से प्रेम करना कैसे सीखा, बताया है (1 थिस्सलुनीकियों 2:7, 8)।[12] उसने यह भी उल्लेख किया कि, वहां सेवा करने के साथ-साथ, उसने और सीलास ने हाथ से मजदूरी करके अपने लिए कमाई की (1 थिस्सलुनीकियों 2:9)।[13] परन्तु, पौलुस के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात, बहुत से थिस्सलुनीकियों द्वारा सच्चे मन से सुसमाचार को मानना था:

> ... तुम क्योंकर मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो। और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उस ने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है (1 थिस्सलुनीकियों 1:9, 10)।

> ... हम ... परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं; कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया: और वह तुम में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)।

दो लोग जिन्होंने सुसमाचार को मान लिया था, वे अरिस्तर्खुस और सिकन्दुस थे (20:4; 27:2)।[14]

थिस्सलुनीके के लोगों के मसीही बनने के बाद, पौलुस उन्हें उस दिन के लिए जिस दिन उसने उनसे विदा लेनी थी, तैयार करने के लिए सिखाता रहा (1 थिस्सलुनीकियों 4:2, 3, 6; 2 थिस्सलुनीकियों 2:15; 3:10)। उन्हें सिखाते हुए, उसने उन्हें उन परीक्षाओं के बारे में बताया जो उनके[15] और उसके सामने थीं। बाद में, उसने लिखा, ''क्योंकि

पहिले भी, जब हम तुम्हारे यहां थे, तो तुम से कहा करते थे, कि हमें क्लेश उठाने पड़ेंगे'' (1 थिस्सलुनीकियों 3:4)।

कष्ट अधिक देर नहीं रहना था, क्योंकि हर एक भले मन की तुलना में, सैकड़ों कठोर मन हैं। पौलुस और सीलास को मिली सफलता से अविश्वासी यहूदी और अधिक विरोधी हो गए थे। हम पढ़ते हैं कि ''यहूदियों ने डाह से भरकर[16] बाजारू लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे'' (प्रेरितों 17:5क, ख)। ''बाजारू लोगों'' वाक्यांश यूनानी शब्द agoraion का अनुवाद है जिसका अनुवाद ''अगोरा लोग'' बनता है। अगोरा (बाज़ार) नगर का हृदय[17] अर्थात व्यापार, राजनीति, और धर्म का केन्द्र होता था। हर युग में मनुष्य के एक समान स्वभाव के कारण, हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं होता कि वहां आस-पास लोफ़र लोग घूमते थे, जो कोई भी शरारत करने के लिए तैयार रहते थे। माना जाता है कि सिसेरो ने इन ''अगोरा लोगों'' को ''सब-रोस्ट्रम्ज़'' अर्थात वे लोग कहा जो अगोरा में रोस्ट्रम[18] के नीचे खड़े होकर, वक्ताओं को परेशान करके खुश होते थे। इन लोगों को किसी के लिए तालियां बजाने या गालियां निकालने के लिए भाड़े पर लिया जा सकता था। स्पष्टत: प्रेरितों 17 में उन्हें और भी ख़तरनाक उद्देश्य के लिए भाड़े पर लिया गया था। लूका ने कहा कि यहूदियों ने, ''बाज़ारू लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ लिया और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे'' (आयत 5ख)।

पौलुस और सीलास यासोन नाम के एक आदमी के घर ठहरे हुए थे (आयत 7), इसलिए भीड़ उसी ओर लपक पड़ी। ''और यासोन के घर पर[19] चढ़ाई करके उन्हें [पौलुस और सीलास को] लोगों के साम्हने लाना चाहा'' (आयत 5ग)। *Demos* का हिन्दी अनुवाद ''लोगों'' है, जिससे हमें ''लोकतन्त्र'' या डेमोक्रेसी (लोगों की सरकार) शब्द मिला है। स्वतन्त्र नगर होने के कारण थिस्सलुनीके लोगों की सभा वाला स्व-शासित नगर था। भीड़ प्रभु के इन सेवकों को इसी सभा के सामने घसीटकर लाना चाहती थी।

पौलुस और सीलास या तो घर पर नहीं थे, या भाइयों ने उन्हें भीड़ के आने से पहले ही भगा दिया था।[20] निराश हुए यहूदी यासोन और कई नए मसीहियों को पकड़ कर ''नगर के हाकिमों के साम्हने खींच लाए'' (आयत 6क)। ''नगर के हाकिम'' शब्द यूनानी के *politarchas* का हिन्दी अनुवाद है जो ''नगर'' (*polis*) के साथ ''हाकिम'' (*arch*) के लिए शब्द को मिलाता है। पुरातात्विक अध्ययनों से स्पष्ट हो चुका है कि थिस्सलुनीके में लोगों की सभा की अध्यक्षता पांच से छह लोग करते थे, जिन्हें ''पोलिटार्क'' कहा जाता था।[21]

यहूदियों ने सभा के सामने अपने व्याकुल होने का वास्तविक कारण नहीं बताया, जो कि सुसमाचार की सफलता के प्रति उनकी ईर्ष्या थी। इसके बजाय उन्होंने वही झूठ दोहराया जो फिलिप्पी में अधिकारियों को गुलामों ने बताया था कि पौलुस और सीलास जो रोमी नियमों और रुचियों के विरुद्ध काम करते हैं, गड़बड़ी फैलाने वाले हैं। वे चिल्लाने लगे: ''कि ये लोग जिन्होंने जगत को उल्टा-पुल्टा कर दिया है, यहां भी आए हैं। और यासोन

ने उन्हें अपने यहां उतारा है,[22] और ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं[23]'' (आयतें 6ख, 7)। पौलुस और सीलास की अनुपस्थिति में उनके विरुद्ध दो विशेष आरोप लगाए गए: (1) वे गड़बड़ कर रहे थे, और (2) उन्होंने यह दावा किया था कि राजा तो यीशु है, जो कि कैसर का विरोध है।[24] पहला आरोप स्पष्ट रूप से झूठा था; ''नगर में हुल्लड़'' पौलुस और सीलास ने नहीं, यहूदियों ने करवाया था (आयत 5)। दूसरा जान बूझ कर उस बात को तोड़ा-मरोड़ा गया था जिसका प्रचार इन प्रचारकों ने किया था।[25] यीशु राजा तो है (1 तीमुथियुस 6:15), उसका राज्य ''इस जगत का नहीं'' (यूहन्ना 18:36), इसलिए वह किसी भी प्रकार कैसर का प्रतिद्वंद्वी नहीं था (मत्ती 22:21)। यासोन के विरुद्ध आरोप था कि उसने गड़बड़ फैलाने वाले इन लोगों की सहायता कर उन्हें उकसाया था।

पौलुस और सीलास को परेशान करने के लिए यहूदियों ने यह कहानी बनाई थी। लेकिन, उन्होंने अनजाने में सुसमाचार की शक्ति के लिए बहुत बड़ा सम्मान प्रकट कर दिया था। वाक्यांश ''उल्टा-पुल्टा करना'' का इस्तेमाल मछुआरे किश्ती को साफ करने के लिए, उसकी मरम्मत करने के लिए, नाल आदि फिर से ठोंकने और रंग करने के लिए ऊपर से नीचे पलटने आदि के लिए करते हैं। यहूदियों ने जो महसूस नहीं किया था, वह यह था कि *पाप* ने जगत को उल्टा दिया था (उत्पत्ति 3) और अन्ततः सुसमाचार उसे फिर से सीधा कर रहा था! मेरी तीव्र इच्छा है कि आज हम पर सुसमाचार के प्रचार से ''जगत को उल्टा-पुल्टा'' करने का आरोप लग सके!

यहूदियों के झूठ बोलते समय अज्ञानता और पूर्वधारणा उन बेईमान मनों पर छाई हुई थी: ''उन्होंने लोगों को और नगर के हाकिमों को यह सुनाकर घबरा दिया। और उन्होंने यासोन और बाकी लोगों से मुचलका लेकर उन्हें छोड़ दिया'' (प्रेरितों 17:8, 9)।[26] ''मुचलका'' एक इकरारनामा अर्थात समझौता था जो यासोन और अन्यों ने लिखना था, और गड़बड़ी की हालत में दिया जाना था। शायद यह बहुत बड़ी धनराशि थी या उनके घरों या उनकी सम्पत्तियों के कागज़ थे। सम्भवतः, समझौते के कुछ भाग से यह गारन्टी दी गई थी कि पौलुस और सीलास नगर को छोड़ जाएंगे और वापस नहीं आएंगे (देखिए 1 थिस्सलुनीकियों 2:18)।

अधिकारियों ने जो भी शर्तें रखी हों, मण्डली पौलुस की सुरक्षा के लिए उन्हें पूरा करने के लिए तैयार थी। अन्धेरे में ही मसीहियों ने ''तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया में भेज दिया'' (प्रेरितों 17:10क)। पौलुस वहां से भारी मन से निकला था, क्योंकि उसके मन में तरुण और अति संवेदनशील मण्डली की सुरक्षा का भय था (1 थिस्सलुनीकियों 1:6; 2:14, 15)। वह जानता था कि वह सताव सहकर भी अपने विश्वास में स्थिर रह सकता है, परन्तु क्या वे सताव के बावजूद स्थिर रह सकते थे?

बिरीया में भले मनों की तलाश (17:10-15)

प्रसिद्ध ओलम्पिक पर्वतों की पादस्थली में बिरीया थिस्सलुनीके के पश्चिम-दक्षिण

पश्चिम की ओर चालीस से पचास मील की दूरी पर था।[27] पौलुस और सीलास ने एगनेशियन मार्ग पर कई मील की यात्रा के बाद दक्षिण की ओर रुख किया होगा। शायद भाइयों ने इस आशा से कि उनके वहां न होने से थिस्सलुनीके के यहूदियों की घृणा खत्म हो जाएगी, उन्हें वहां से भगा दिया।[28] परन्तु, बिरीया एक समृद्ध और घनी आबादी वाला क्षेत्र था, इसलिए सम्भव है कि पौलुस ने प्रचार के लिए पहले से ही अगला स्थान बिरीया को चुना होगा।

यदि पौलुस और सीलास को बिरीया में भेजने वाले मसीहियों ने यह सोचा होगा कि वे थिस्सलुनीके में शान्ति होने तक अज्ञातवास में रह सकेंगे, तो सम्भवत: वे इन दोनों के दृढ़ संकल्प को नहीं जानते थे। बिरीया में पहुंचते ही वे ''यहूदियों के आराधनालय में गए'' (आयत 10ख)। उनके सुखद आश्चर्य के लिए, बिरीया का आराधनालय भले मनों से भरा हुआ था, जिनमें न केवल परमेश्वर का भय रखने वाले गैर-यहूदी ही, बल्कि यहूदी भी थे: ''ये [यहूदी][29] लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे[30] और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं'' (आयत 11)।

यदि थिस्सलुनीके में हुए काम से यह प्रकट हुआ कि सुसमाचार का प्रचार कैसे होना चाहिए, तो बिरीया में हुए काम से यह प्रकट हुआ कि सुसमाचार को ग्रहण कैसे करना चाहिए। लूका ने पौलुस और सीलास के सुनने वालों के चार गुणों की सराहना की: (1) वे ग्रहण करने वाले थे: ''उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया।'' (2) वे ध्यान से काम करने वाले थे: वे हर रोज़ पौलुस के साथ शास्त्रों का अध्ययन और खोज करने के लिए इकट्ठे होते थे । (3) वे सचेत थे: उनका संशय भलाई के लिए था। उन्होंने जब तक स्वयं परख न लिया तब तक पौलुस और सीलास की बात को सही नहीं माना। बल्कि, वे ''शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं।'' भला आदमी और भोलाभाला होने में अन्तर है। (4) वे परमेश्वर और उसके वचन के प्रति विश्वासी थे: उन्होंने धर्म में शास्त्र को अंतिम अधिकार के रूप में मान्यता दी। उन्होंने पौलुस की बातों को अपने पिछले विचारों के आधार पर नहीं जांचा। उन्होंने पौलुस की बातों को उपयोगिता की कसौटी पर नहीं परखा कि वे ''व्यावहारिक'' या ''काम में आने वाली'' हैं भी या नहीं। उन्होंने पौलुस की शिक्षा को पवित्र शास्त्र की रोशनी में परखा! लूका ने प्रेरित के रूप में पौलुस को स्वीकार करने की उनकी परख की सराहना की! हमें ऐसे और लोगों की आवश्यकता है जो सच्चाई को ग्रहण करने के लिए तैयार रहें परन्तु वे बाइबल को ग्रहण करने से पूर्व कायल हों कि उसमें दी गई शिक्षा एक सच्चाई है!

यह जानते हुए कि *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* दूर-दूर के इलाकों में पढ़ा जाता है, मेरे मन में बड़ा भय है कि ऐसे भी लोग हो सकते हैं जो मेरी बात को इसलिए स्वीकार कर लें क्योंकि यह मैंने कही है! जो कुछ मैं कहता हूं या कोई और कहता है, उसकी परमेश्वर के वचन के प्रकाश में जांच कीजिए। यदि यह सत्य है, तो इसे स्वीकार करें, गलत है, तो ठुकरा दें! यह सुझाव मसीह की देह के अन्दर और बाहर रहने वाले दोनों प्रकार के लोगों के

लिए है। परमेश्वर के एकमात्र अधिकार को छोड़कर मनुष्यों के अधिकारों को मानने के कारण ''संसार के मन में आने वाले स्वप्न'' से भी अधिक गलतियां मनुष्यों द्वारा हुई हैं (1 कुरिन्थियों 4:6)!

भले मन के होने के कारण बिरीया के यहूदियों ''में से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों[31] में से, और पुरुषों में से बहुतेरों ने विश्वास किया'' (प्रेरितों 17:12)। थिस्सलुनीके में ''कितनों [यहूदियों] ने ... मान लिया'' था (आयत 4), पर बिरीया में ''बहुतों ने ... विश्वास किया'' (आयत 14)। इस प्रकार हम बेईमान और भले मनों में अन्तर देखते हैं।

हम नहीं जानते कि पौलुस और सीलास बिरीया में कितनी देर रहे, परन्तु एक बार फिर परमेश्वर के लोगों की मण्डली स्थापित हो गई थी। यहां परिवर्तित होने वालों में से एक सोपत्रुस था, जो बाद में पौलुस के साथ यात्रा में शामिल था (20:4)।

अन्तत:, पौलुस और सीलास की सफलता की बात फिर थिस्सलुनीके में पहुंची। यदि थिस्सलुनीके के यहूदियों का क्रोध ठण्डा हो गया था, तो इस समाचार ने कि बिरीया के बहुत से यहूदी मसीही बन गए थे, उनके लिए आग में घी का काम कर दिया था। उनका ख्याल था कि पौलुस से उनका पीछा छूट गया, परन्तु वह फिर चालीस या पचास मील दूर अपनी निन्दनीय शिक्षा का प्रचार कर रहा था! जल्दी ही वे बिरीया की ओर चले गए। ''किन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदी जान गए, कि पौलुस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन सुनाता है, तो वहां भी आकर लोगों को उकसाने और हलचल मचाने लगे'' (आयत 13)।[32] इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने वही चालाकी खेली जिसमें वे थिस्सलुनीके में सफल हुए थे।

भीड़ का गुस्सा पौलुस पर था, इसलिए मसीहियों ने उसे इतनी दूर भगाने का निश्चय किया कि थिस्सलुनीके के हिंसक यहूदी उस तक न पहुंच सकें। फिर से भाइयों ने उसे यूनान के दक्षिणी भाग अथेने में भेज दिया जिसे अखया के नाम से जाना जाता था (आयतें 14क, 15क)।[33] एक बार फिर पौलुस के लिए छोड़ कर जाना कठिन था, परन्तु वह यह जान कर संतुष्ट था कि वह अपने पीछे मकिदुनिया में प्रभु की तीन नई मण्डलियां छोड़कर जा रहा था। नये मसीहियों की सहायता के लिए सीलास और तीमुथियुस बिरीया में ही रहे[34] (आयत 14ख)।

अथेने में भले मनों की तलाश (17:14, 15)

यदि पौलुस तथा बिरीया के भाई पैदल चलकर अथेने में जाते, तो उन्हें वहां पहुंचने में बहुत दिन लग जाते। परन्तु, जहाज़ से यह केवल कुछ ही दिनों का सफ़र था, इसलिए सम्भवत: वे जहाज़ से ही गए। ''तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस को विदा किया, कि समुद्र के किनारे चला जाए; ... पौलुस के पहुंचाने वाले उसे अथेने तक ले गए, और ... विदा

हुए ...'' (आयतें 14, 15)।

जब से पौलुस को कलीसिया द्वारा अन्ताकिया में भेजा गया था, तब से अब तक यह पहला अवसर था कि वह अकेला हुआ, वह भी संसार के अति प्रभावशाली नगरों में से एक में। वह बहुत प्रभावित हुआ, परन्तु (जैसा कि हम अगले पाठ में देखेंगे) इससे भले मनों की उसकी तलाश खत्म नहीं हुई।

सारांश

इस पाठ में भी हमारे सीखने के लिए बहुत सी लाभदायक शिक्षाएं हैं: (1) हमारे लिए परमेश्वर के वचन का प्रचार करते रहना आवश्यक है। पौलुस ने ''पवित्र शास्त्रों से उनके साथ विवाद किया'' (आयत 2; आयत 13 भी देखिए)। (2) परिणाम कुछ भी हो, हमें परमेश्वर के वचन का प्रचार करना चाहिए। पौलुस ने थिस्सलुनीके में ''कुछ'' यहूदियों को और बिरीया में ''बहुत से'' यहूदियों को बपतिस्मा दिया, परन्तु उसने दोनों स्थानों पर एक ही बात का प्रचार किया। प्रचार करने और शिक्षा देने में विश्वास योग्य रहकर, फल हमें परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए (1 कुरिन्थियों 3:7)। (3) हमें अपने सुनने वालों को कहना चाहिए कि वे केवल उन बातों पर विश्वास न करें जो हमने कहीं। बल्कि, हमारी हर शिक्षा (या किसी और की शिक्षा) को शास्त्र के प्रकाश में परखें (आयत 11)! (4) यदि हम सच्चे मन से परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हैं, तो यह लोगों की भलाई या बुराई के लिए तत्पर करेगा। हम कुछ अधिक ही सतर्क रहते हैं, शायद डरते हैं कि कहीं कोई बुरा न मान जाए। अर्थात हम किसी को ठोकर या कष्ट नहीं देना चाहते। एक छोटे से लड़के ने कोई बड़ी गलती नहीं की जब उसने यह कहा, ''बाइबल लोगों के मनों को बदलने के बाद समाप्त होती है।''

परन्तु, इस पाठ में, हमने भले मनों की तलाश के महत्व पर ज़ोर देने की कोशिश की है। जैसा कि हमने देखा, परमेश्वर के वचन का प्रचार किए जाने पर भले मन उसे स्वीकार कर लेंगे; परन्तु बेईमान उसे स्वीकार नहीं करेंगे। भले मन कैसे मिल सकते हैं? दुर्भाग्यवश, लोगों के चेहरों पर नहीं लिखा होता कि ''मैं एक भला आदमी हूं'' या ''मैं एक बेईमान आदमी हूं।'' भले मनों को ढूंढ़ने का मुझे एक ही तरीका आता है जिसका इस्तेमाल पौलुस और सीलास ने किया: समय-असमय यीशु मसीह के बारे में बताते रहें (2 तीमुथियुस 4:2)। और फिर जब कोई सकारात्मक ढंग से उसे मान ले तो उसके लिए आनन्दित हों। बधाई हो! आपको भला मन मिल गया।[35]

प्रवचन नोट्स

वारेन वियर्सबे ने अध्याय 17 की रूपरेखा इस प्रकार बनाई: (1) थिस्सलुनीके: वचन का विरोध करने वाला, (2) बिरीया: वचन को ग्रहण करने वाला, (3) अथेने: वचन का

ठट्ठा उड़ाने वाला (द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री vol. 1)।

दैनिक बाइबल अध्ययन की सामान्य आवश्यकता और शास्त्र के प्रकाश में सभी धार्मिक शिक्षाओं को जांचने की विशेष आवश्यकता पर प्रेरितों 17:11 एक अच्छा उदाहरण है।

पाद टिप्पणियां

[1]अगले भाग में प्रेरितों 20:28 पर नोट्स देखिए। [2]कई लोगों को ऐसा 16:40 और 17:1 में पौलुस और सीलास के लिए ''वे'' के प्रयोग के कारण लगता है। तीमुथियुस का अगली बार उल्लेख बिरीया में आया है (17:14)। यकीनन ही, तीमुथियुस पौलुस और सीलास के साथ चला गया होगा जिसका कारण नहीं बताया गया है। [3]पृष्ठ 183 पर मानचित्र देखिए। [4]अम्फिपुलिस वहां से लगभग तीस मील दूर था, अपुलोनिया उसके आगे तीस मील से थोड़ा कम और थिस्सलुनीके उसके आगे तीस मील से कुछ अधिक दूर था। [5]काम करने का पौलुस का सामान्य ढंग घनी आबादी वाले क्षेत्रों में सुसमाचार का प्रचार करना और फिर वहां से दूरस्थ क्षेत्रों में सुसमाचार को फैलाना होता था। अम्फिपुलिस और अपुलोनिया में सुसमाचार का प्रचार उसी प्रकार हो सकता था जैसे फिलिप्पी और थिस्सलुनीके में हुआ था (ध्यान दें 1 थिस्सलुनीकियों 1:8)। [6]थिस्सलुनीके ने पहले रोम का पक्ष लिया था और उसे स्वतन्त्र करके पुरस्कार दिया गया था। स्वतन्त्र नगर होने का अर्थ है कि यह स्वाधीन था, अपने सिक्के अर्थात मुद्रा चला सकता था, और इसकी दीवारों के भीतर कोई रोमी सेना नहीं थी। यह रोमी नगर से अधिक यूनानी नगर लगता था। [7]यह नगर (अब सलोनिका के नाम से प्रसिद्ध) आज भी दक्षिण-पूर्वी यूरोप की एक बड़ी बन्दरगाह है। [8]इसका अर्थ यह नहीं कि वे तीन सप्ताह तक केवल थिस्सलुनीके में ही थे। इससे यह पता चलता है कि पौलुस ने उस नगर में रहकर क्या किया था। [9]इसके उदाहरण के लिए कि उसने यह कैसे किया था, पिसिदिया के अन्ताकिया में आराधनालय में पौलुस का प्रवचन देखिए (13:16-42)। [10]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' की शब्दावली में देखिए ''परमेश्वर का भय मानने वाला।''

[11]वैस्टर्न टैक्सट के अनुसार ''कुलीन स्त्रियां'' नगर के नेताओं की पत्नियों को कहा गया है। बहुत सी गैर-यहूदी औरतें यहूदी मत की शिक्षा तथा नियमों के प्रति आकर्षित होती थीं। सामान्य की भान्ति, लूका ने स्त्रियों की भूमिका की प्रशंसा की। [12]1 से 4 आयतें थिस्सलुनीके में पौलुस के पहले तीन सप्ताहों और 5 से 9 आयतें उसके वहां रहने के अन्त के बारे में बताती हैं, इसलिए स्पष्ट है कि हमें समझना चाहिए कि आयत 4 और 5 के बीच के समय का एक अंतराल है जिसमें पौलुस ने थिस्सलुनीके में अपना अधिकतर काम किया। [13]परन्तु, एक से अधिक बार उन्हें फिलिप्पी से कुछ आर्थिक सहायता प्राप्त हुई (फिलिप्पियों 4:15, 16)। [14]उनके नामों के कारण अनुमान लगाया जाता है कि अरिस्तर्खुस यहूदी था और सिकन्दुस यूनानी। [15]ध्यान दें प्रेरितों 14:22. [16]हम ऐसी ही डाह पहले देख चुके हैं (13:45)। [17]परमेश्वर की सहायता से बदलते जीवन पाठ में 16:19 पर नोट्स देखिए। [18]यूनानी लोग इस मंच को बिना और रोमी इसे रोस्ट्रम कहते थे। (18:12 पर नोट्स देखिए)। इसे विभिन्न उद्देश्यों और प्राय: किसी वक्ता के मंच के लिए इस्तेमाल किया जाता था। [19]हम नहीं जानते कि यासोन मसीही था या नहीं। तथ्य जिससे पाठ में ''यासोन'' और ''कितने और भाइयों'' (आयत 6) में अन्तर का संकेत मिल सकता है कि वह मसीही नहीं था। परन्तु, मेरा तो यही मत है कि वह मसीही था। कई लोगों का विचार है कि यह वही यासोन था जिसका उल्लेख रोमियों 16:21 में किया गया। यदि ऐसा है, तो वह बाद में कुरिन्थुस में गया। [20]परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध से, पौलुस को प्राय: (हर बार नहीं) आने वाली मुश्किल की पहले से ही चेतावनी दे दी जाती थी। शायद यहां भी ऐसा ही हुआ था।

[21]वर्षों तक, संदेहवादी लोग लूका द्वारा प्रयुक्त शब्द ''पोलिटार्क'' को चुनौती देते रहे जब तक यह शब्द बाइबल से बाहर के लेखों में मिल नहीं गया। फिर थिस्सलुनीके में वरदार नामक द्वार की खोज हुई

जिस पर नगर के छह पोलिटार्कों के विषय में उकेरा हुआ है। तब से लेकर, ऐसे कई शिलालेख मिले हैं। [22]यदि यासोन मसीही था, तो शायद लुदिया की तरह (16:15, 40) उसने मसीही बनने के बाद पौलुस और सीलास को अपने घर बुलाया। [23]यहूदियों का इन बातों से दम घुटने लगा होगा। कलौदियुस कैसर उनका घोषित शत्रु था (18:2), परन्तु उन्होंने उसके आदेशों को मानने का बहाना किया! बेईमान हृदय की बेईमानी की कोई सीमा नहीं होती। [24]यही आरोप यीशु के विरुद्ध लगाया गया था (लूका 23:2)। [25]मैं इसे ''जान-बूझकर तोड़ना-मरोड़ना'' कहता हूं क्योंकि पुनरुत्थान के प्रचार के एक भाग के रूप में, सुसमाचार प्रचारकों ने यह स्पष्ट कर दिया था कि यीशु स्वर्ग में लौट गया था। इसलिए, वह सांसारिक राजा का प्रतिद्वंद्वी नहीं हो सकता था। [26]उन्होंने अधिकारियों को ''घबरा दिया'' होगा, परन्तु आरोपों की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए यासोन और अन्यों के साथ नरमी से बर्ताव किया गया। यह इस तथ्य पर बल देता है कि उन आरोपों का कोई ठोस प्रमाण नहीं था। [27]पृष्ठ 183 पर मानचित्र देखिए। [28]कई लोगों का सुझाव है कि पौलुस की योजना एगनेशियन मार्ग पर पश्चिम की ओर, रोम में पहुंचने तक बड़े नगरों में प्रचार करते रहने की थी (रोमियों 1:13; 15:22)। यदि उसकी यह योजना थी, तो दूसरी बार परमेश्वर ने उसकी योजना को बदलने के लिए हस्तक्षेप किया। [29]वर्षों तक मेरे मन में यह था कि लूका साधारण तौर पर थिस्सलुनीके के लोगों की तुलना में, बिरीया के लोगों की बात कर रहा था। परन्तु, अन्त में मैंने महसूस किया कि इस संदर्भ में वह बिरीया के यहूदियों और थिस्सलुनीके के यहूदियों की तुलना कर रहा था। [30]मूल शास्त्र में केवल ''More Noble'' है। ''भले'' के लिए अंग्रेजी शब्द Noble का यूनानी में प्रयोग कुलीन घराने में जन्म लेने वाले के लिए भी किया जाता था। लूका ने नोबल शब्द का प्रयोग जानबूझकर यह समझाने के लिए किया होगा कि कुलीन घराने में जन्म लेने से अधिक महत्व नोबल चरित्र का है।

[31]लूका द्वारा स्त्रियों की भूमिका पर ज़ोर देने की ओर फिर ध्यान दें। उसने इस आयत में पुरुषों से पहले उनका नाम दिया। [32]14:19 में हमने एक ऐसी ही घटना का अध्ययन किया। ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' में उस आयत पर नोट्स देखिए। [33]कुछ प्राचीन पाण्डुलिपियों से यह प्रश्न उठता है कि पौलुस को छोड़ते समय भाइयों के मन में कोई निश्चित ठिकाना था भी या नहीं, और वे अथेने में जल मार्ग से गए या थल मार्ग से। जो दृश्य मैं पाठ में देता हूं मुझे वही सही लगता है, लेकिन और